# राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक: 01] सोलहवीं विधान सभा के पहले सत्र का दूसरा दिवस [संख्या: 02

**गुरुवार,**

**21 दिसम्बर 2023**

**(राजस्थान विधान सभा की बैठक 14.30 बजे**

**राजस्थान विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।)**

**(श्री कालीचरण सराफ, अस्थायी अध्यक्ष, पदासीन)**

**श्री अध्यक्ष**: शपथ अथवा प्रतिज्ञान। प्रमुख सचिव।

## शपथ एवं प्रतिज्ञान

### नव-निर्वाचित सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण एवं प्रतिज्ञान

(माननीय सदस्यों ने उनके नाम के सम्मुख अंकित भाषा में शपथ ग्रहण की/प्रतिज्ञान किया)

| क्र.सं. | सदस्य का नाम | शपथ/प्रतिज्ञान | भाषा |
|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 |
| | (माननीय सदस्यों द्वारा पूर्व शपथ ग्रहण/प्रतिज्ञान से क्रमवार) | | |
| | श्री जगत सिंह (नदबई) | (अनुपस्थित) | |
| 191 | श्री बहादुर सिंह (वैर) | शपथ | हिन्दी |
| 192 | श्री भागचन्द टांकड़ा (बांदीकुई) | शपथ | हिन्दी |
| 193 | महन्त बालकनाथ (तिजारा) | शपथ | हिन्दी |
| | श्री महेन्द्र जीत सिंह मालविया (बागीदोरा) | (अनुपस्थित) | |
| 194 | श्री विरेन्द्र सिंह (मसूदा) | शपथ | हिन्दी |
| 195 | श्री श्रीचन्द कृपलानी (निम्बाहेड़ा) | शपथ | हिन्दी |

**श्री श्रीचन्द कृपलानी** (निम्बाहेड़ा): 000

**श्री अध्यक्ष**: शपथ के अलावा कोई भी बात अंकित नहीं होगी। आइए।

**श्री जुबेर खान** (रामगढ़): 000

**श्री अध्यक्ष**: मैंने अंकित नहीं करने के निर्देश दे दिए। शपथ के अलावा जो भी शब्द हैं, वह अंकित नहीं होंगे, मैंने कह दिया है।

**श्री जुबेर खान** (रामगढ़): 000

**श्री अर्जुन लाल जीनगर** (कपासन): 000

**श्री अर्जुनसिंह बामणीया** (बांसवाड़ा): 000

**श्री अध्यक्ष**: आप सब बैठिए। प्लीज, बैठिए। सब की हो गयी?

**श्री जुबेर खान** (रामगढ़): 000

**श्री अर्जुन लाल जीनगर** (कपासन): 000

**श्री अध्यक्ष**: जुबेर खान जी, बैठिए। माननीय सदस्य, बैठिए।

| **क्र.सं.** | **सदस्य का नाम** | **शपथ/प्रतिज्ञान** | **भाषा** |
|---|---|---|---|
| 196. | श्री सोहन लाल नायक (रायसिंहनगर) | शपथ | हिन्दी |

**श्री अध्यक्ष**: सदन की बैठक 03.10 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

**(तदनन्तर सदन की बैठक 14.38 बजे 15.10 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)**

**(समय: 15.10 बजे)**

**पुन: समवेत होने पर**

**(श्री कालीचरण सराफ, अस्थायी अध्यक्ष, पदासीन)**

**श्री अध्यक्ष**: सदन की बैठक 3.30 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

**(तदनन्तर सदन की बैठक 15.10 बजे 15.30 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)**

**(समय: 15.30 बजे)**

**पुन: समवेत होने पर**

**(श्री कालीचरण सराफ, अस्थायी अध्यक्ष, पदासीन)**

## अध्यक्ष का निर्वाचन

### वासुदेव देवनानी, श्री, सदस्य, का अध्यक्ष के रूप में निर्वाचन

**श्री अध्यक्ष**: अध्यक्ष का निर्वाचन। श्री भजन लाल शर्मा।

**श्री भजन लाल शर्मा** (मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से यह प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं कि "श्री वासुदेव देवनानी, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-147) को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।"

**श्री अध्यक्ष**: श्री सचिन पायलट।

**श्री सचिन पायलट** (टोंक): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

**श्री अध्यक्ष**: श्री अशोक गहलोत। नहीं हैं? (अनुपस्थित)।

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा।

**श्री गोविन्द सिंह डोटासरा** (लक्ष्मणगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, बिना प्रस्ताव के अनुमोदन हो नहीं सकता और बिना मुख्य मंत्रीजी के यह सदन चल नहीं सकता था तो दोनों ही बातें हो गईं।

**श्री अध्यक्ष**: विराजिये। श्रीमती वसुन्धरा राजे।

**श्रीमती वसुन्धरा राजे** (झालरापाटन): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से यह प्रस्ताव प्रस्तुत करती हूं कि "श्री वासुदेव देवनानी, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-147) को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।"

**श्री अध्यक्ष**: श्री राजकुमार रोत।

**श्री राजकुमार रोत** (चौरासी): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं। धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष**: श्रीमती दिया कुमारीजी।

**सुश्री दिया कुमारी** (उप मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से यह प्रस्ताव प्रस्तुत करती हूं कि "श्री वासुदेव देवनानी, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या-147) को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।"

**श्री अध्यक्ष**: श्री चन्द्रभान सिंह चौहान।

**श्री चन्द्रभान सिंह चौहान** (चित्तौड़गढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

**श्री अध्यक्ष**: श्री हनुमान बेनीवाल।

**श्री हनुमान बेनीवाल** (खींवसर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से यह प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं कि "श्री वासुदेव देवनानी, सदस्य, राजस्थान विधान सभा (विभाजन संख्या-147) को राजस्थान विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया जाए।"

**श्री अध्यक्ष**: डा. सुभाष गर्ग।

**डा. सुभाष गर्ग** (भरतपुर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

**श्री अध्यक्ष**: प्रश्न यह है कि जो प्रस्ताव श्री भजन लाल शर्मा, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या 105) ने प्रस्तुत किया तथा जिसका अनुमोदन श्री सचिन पायलट, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या 173) ने किया है, को स्वीकार किया जाए?

**(स्वीकृत)**

श्री वासुदेव देवनानी, सदस्य, विधान सभा (विभाजन संख्या 147) सर्वसम्मति से राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

सदन के नेता और पूर्व मुख्य मंत्री निर्वाचित अध्यक्ष को आसन तक लाएंगे।

**(समय: 15.34 बजे)**

**(श्री वासुदेव देवनानी, अध्यक्ष, पदासीन)**

**अनेक माननीय सदस्य**: बहुत-बहुत बधाई।

**श्री अध्यक्ष**: आप सबको धन्यवाद। आसन पांवों पर आ गया। आप सब विराजिये। कार्यवाही शुरू करें? आप सब अपने-अपने स्थानों पर विराजें। आप सब लोगों से यह निवेदन है कि आप सब अपने-अपने स्थान पर पधारें।

अब कार्यवाही शुरू की जा रही है। सब माननीय सदस्यों से यह निवेदन है कि अपना-अपना स्थान ग्रहण करें। सब माननीय सदस्यों से यह निवेदन है कि अपने-अपने स्थान पर विराजें। सब माननीय सदस्य अपने-अपने स्थान पर विराजें।

माननीय मुख्य मंत्रीजी।

## बधाई एवं आभार

## वासुदेव देवनानी, श्री, सदस्य, के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मत निर्वाचन पर बधाई

**श्री भजन लाल शर्मा** (मुख्य मंत्री): मैं राजस्थान विधान सभा के गरिमामय पद पर आपके सर्वसम्मत निर्वाचन के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

(श्री भजन लाल शर्मा)

राजस्थान विधान सभा की गौरवशाली परम्परा रही है कि विधान सभा के अध्यक्ष पद का निर्वाचन हमेशा सर्वसम्मति से हुआ है।

मुझे उम्मीद है कि राजस्थान विधान सभा के गरिमापूर्ण इतिहास को आपकी अध्यक्षता में और चार चांद लगेंगे तथा आपकी अध्यक्षता में यह सदन राजस्थान के चहुंमुखी विकास का साक्षी रहेगा।

अध्यक्ष महोदय, आपका दीर्घकालीन संसदीय जीवन और एक शिक्षाविद् के रूप में, विद्यार्थी परिषद के कार्यकाल से लेकर अब तक का आपका मूल चिंतन राजस्थान के विकास में हम सब सदस्यों का गरिमापूर्ण मार्गदर्शन करेगा।

मैं उम्मीद करता हूं कि आपके नेतृत्व में यह सदन ''सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास'' की अवधारणा को मूर्त रूप देगा।

हमारे लिये यह गर्व की बात है कि देश के लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर दोनों सदनों (लोक सभा व राज्य सभा) का संचालन हमारे इसी विधान सभा के सदस्य रहे श्री ओम बिरला जी व श्री जगदीप धनखड़ जी कर रहे हैं। आप दोनों देश के संसदीय लोकतंत्र को पल्लवित, पुष्पित करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि हम सब सदस्य मिलकर हमारे इस पवित्र मंदिर रूपी सदन की मर्यादा और सम्मान को कभी ठेस नहीं पहुंचाएंगे तथा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर जनता से जुड़े मुद्दों को संसदीय प्रणाली के अनुरूप उठायेंगे। आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

**श्री अध्यक्ष**: श्री सचिनजी पायलट।

**श्री सचिन पायलट** (टोंक): अध्यक्षजी, सबसे पहले तो मैं अपनी तरफ से भी आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं इस पर आसीन होने के लिए। जैसा कि माननीय मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि सदन की परम्परा रही है कि हमेशा अध्यक्ष का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ है। इस बार जब विधान सभा चुनाव सम्पन्न हुए जिस गर्म माहौल में चुनाव हुए उसके बाद जब स्पीकर के चुनाव की बात आयी तो हम में से कुछ लोगों ने सोचा कि इस बार स्पीकर का चुनाव होगा, लेकिन फिर जब अख़बार से पता चला कि आपका नाम सामने आया है, फिर हम सबने मन बनाया कि अगर देवनानीजी बनेंगे तो चुनाव सर्वसम्मति से होगा, क्योंकि आप सदन में बहुत ही एक्टिव सदस्य

(श्री सचिन पायलट)

रहे। आपने विपक्ष के नाते, सरकार के नाते कई बार अपने सदन में अपनी बात को रखा। आपका लम्बा अनुभव रहा है। यह बात सही है कि जो परिपाटी बनी हुई है, उसकी पालना आप पूरी तरह करेंगे। मैं विपक्ष की तरफ से, अपने दल की तरफ से उम्मीद करता हूं कि आपका हर निर्णय, आपकी हर रूलिंग न्यायपूर्वक होगी। अब आप सदन में दलगत राजनीति से उठ चुके हैं, इसलिए इस बड़े पद पर बैठ कर आप इसको और गौरवशाली बनायेंगे, ऐसी मैं उम्मीद करता हूं। आने वाले समय में जो संवाद होगा, जो चर्चा होगी और हम लोग सदन में बहस करने के बाद जनता की उम्मीदों पर खरे उतर पायेंगे। नये कानून बनेंगे, बजट पारित होंगे, चर्चाएं होंगी, लेकिन इसमें आपकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रहेगी क्योंकि जब आप विपक्ष में थे तो आप बहुत जुझारू सदस्य थे। आप समझ सकते हैं कि मैं किस जज्बे के साथ बात को बोल रहा हूं तो आप इसका पूरा ध्यान रखेंगे और समय का आबंटन हो या रूलिंग की बात हो, उसमें आप पूरी हमदर्दी के साथ हम सब विपक्ष के लोगों का ध्यान रखेंगे। इस उम्मीद के साथ कि आपका कार्यकाल बढ़िया हो और इसके बाद आप और बड़े पदों पर जाएं। इसी के साथ आपको पुन: बहुत-बहुत बधाई।

**श्री अध्यक्ष**: माननीय गोविन्द सिंहजी डोटासरा।

**श्री गोविन्द सिंह डोटासरा** (लक्ष्मणगढ़): माननीय स्पीकर साहब, सबसे पहले तो आपको बहुत-बहुत बधाई। यह राजस्थान विधान सभा की गौरवशाली परम्परा का निर्वहन हो रहा है कि हम सबने मिलकर हमेशा की भांति सबकी सहमति से, यूनानीमसली आपको स्पीकर चुना है। स्पीकर का राजस्थान की विधान सभा में बहुत बड़ा रोल होता है, क्योंकि सत्तापक्ष हो, चाहे विपक्ष हो, वह स्पीकर के कन्ट्रोल में रहता है। स्पीकर जो नियम, प्रक्रिया, परम्परा चली आ रही हैं, उनका निर्वहन करवाता है और विशेष रूप से सत्तापक्ष से भी ज्यादा मैं समझता हूं कि स्पीकर हमेशा विपक्ष के प्रति बहुत लिबरल रहता है, क्योंकि विपक्ष के पास में केवल एक हथियार होता है कि वह सरकार की जो भी योजनाएं हैं, उनमें सुझाव देना हो या उसमें कोई कमी-खामी हो या अपने अधिकारों की कहीं कोई अवहेलना हो रही है या कहीं कोई दिक्कत आ रही है या कोई बात रखना चाहता है तो माननीय स्पीकर साहब उनको संरक्षण प्रदान करते हैं। वैसे भी सबको साथ लेकर चलने का आपका स्वभाव रहा है। हमने देखा है, जब आप शिक्षा मंत्री के रूप में थे तो आपके पास जो भी जाता था तो आप सबको सम्मान देते थे। पहले तो हम सोच रहे थे, क्योंकि आपके दल

(श्री गोविन्द सिंह डोटासरा)

ने यह तय कर रखा था कि इस उम्र से ऊपर यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता तो हमने सोच लिया था कि आप अंडमान निकोबार के राज्यपाल बनेंगे, लेकिन हमारा सौभाग्य है कि आप यहां विधान सभा में भी आये और आप राजस्थान की विधान सभा के स्पीकर बने। मैं इतना ही निवेदन करना चाहूंगा माननीय स्पीकर साहब, आपके ऊपर कोई भी दबाव आये, चाहे दिल्ली से आये, चाहे किसी भवन से आये, आप निष्पक्ष रहेंगे, यह आपसे पूरा विपक्ष उम्मीद करता है।

चूंकि अब आप संन्यास आश्रम की तरफ बढ़ रहे हैं तो मैं समझता हूं कि जब संन्यास आश्रम की तरफ व्यक्ति बढ़ता है तो न तेरा, न मेरा, सबको, पूरे जगत को, पूरे पक्ष और विपक्ष को एक मानकर विधान सभा की प्रक्रियाओं को और गौरवान्वित करेंगे। हां, यह बात जरूर है जो हमें भी खली कि आपका जो मुहूर्त था, माननीय मुख्य मंत्रीजी के दिल्ली से आने में देरी की वजह से थोड़ा टूटा है, परम्पराएं थोड़ी टूटी हैं, वह आगे नहीं टूटे।

महामहिम राज्यपाल ही विधान सभा का प्रथम सत्र बुलाता है और वह खुद यहां पर अभिभाषण देते हैं। इस परम्परा को भी इस बार तोड़ा गया है। हमें एतराज है, लेकिन मैं समझता हूं कि आगे से कम से कम ये परम्पराएं आज या कल, जितनी भी टूटी हैं, वे नहीं टूटें और सदन में सार्थक चर्चा के साथ राजस्थान की जनता के मुद्दों पर चर्चा और जो मंथन हो, उसमें से अमृत निकले और राजस्थान की जनता की हम किस प्रकार से सेवा कर सकें पक्ष और विपक्ष मिलकर के, यह हम लोग भी प्रयास करेंगे। हम भी संकल्प लेते हैं कि हम आपको ज्यादा परेशान नहीं करेंगे, लेकिन पिछले टर्म में जैसा हुआ था उसमें मेरा और तेरा वहां से होने लग गया था, वह नहीं होना चाहिए। फिर मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम सब मिलकर, आप एक समान दृष्टि से देखेंगे तो सत्तापक्ष को भी हम सहयोग करेंगे, क्योंकि जो सरकार बन गयी, वह राजस्थान की जनता ने पांच साल के लिए चुनी है। वह जो अच्छा काम करेगी, उसके लिए हम मेज थपथपा कर स्वागत करेंगे। अगर हमें कोई कमी-खामी लगेगी तो हम आपके माध्यम से सरकार तक, मंत्री और मुख्य मंत्री तक बताने की चेष्टा करेंगे।

आप जैसा वरिष्ठ, विद्वान और क्या-क्या, जितने भी अलंकार संस्कृत में, व्याकरण में हैं, वह सब मैं आपको समर्पित करता हूं। आप बने हैं तो हम

(श्री गोविन्द सिंह डोटासरा)

सब सुरक्षित हैं। प्रतिपक्ष अपनी बात आराम से रख पायेगा। इन्हीं आशा और अपेक्षा के साथ आपको पुन: बहुत-बहुत बधाई। बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष**: धन्यवाद। माननीय श्रीमती वसुन्धराजी राजे।

**श्री जोगेश्वर गर्ग** (जालौर): अध्यक्ष महोदय, विवाद का मौका नहीं है, लेकिन माननीय सदस्यों की शपथ से पहले आज तक कभी भी राज्यपाल महोदय का अभिभाषण नहीं हुआ।

**श्री अध्यक्ष**: माननीय सदस्य, अभी विराजें।

**श्रीमती वसुन्धरा राजे** (झालरापाटन): माननीय अध्यक्षजी, विधान सभा अध्यक्ष पद पर निर्विरोध आप निर्वाचित हुए हैं इसलिए मैं हम सबकी ओर से आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं प्रेषित करना चाहूंगी। आपकी लगातार पांचवीं बार जीत हुई है और हम लोग इस हाउस में एक साथ कई दिनों के लिए बैठे हैं। आप जैसा जनप्रिय, ईमानदार और समर्पित जन-प्रतिनिधि हम लोगों के बीच, आज इस कुर्सी पर बैठे हैं। इससे मुझे और हम सबको यह विश्वास है कि आने वाले समय के अन्दर हम आपकी ओर से न्यायोचित कार्यवाही हम सबके लिए, अभी ये तो कह ही रहे थे, परन्तु मैं समझती हूं कि यह इनकी ही बात नहीं है, हम सबकी बात है और हम सबको ध्यान में रखते हुए आप हम सबको मौका देंगे अपनी बात को इस सदन में रखने के लिए।

भाजपा सरकार में आपने बहुत अच्छे और बड़े पद संभाले हैं। चाहे वह शिक्षा का हो, चाहे उच्च शिक्षा का हो, चाहे ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज के महत्वपूर्ण विभाग हों, आपने उनको बहुत ही अच्छे तरीके से संभाला है।

आपने शिक्षा के क्षेत्र के अन्दर बहुत अच्छी और बड़ी उपलब्धियां अर्जित की हैं। मैं समझती हूं कि आपके कार्यकाल के समय जो शिक्षा के अन्दर हम लोगों ने कदम उठाये थे, वे एक किस्म से सर्वमान्य रहेंगे और यह हमारा सौभाग्य है कि आप जैसे एक एक्सपीरियंस्ड और अच्छे इंसान को इस सदन के अन्दर इस सर्वोच्च पद पर आसीन होने का आज अवसर मिला है।

यह सदन एक तराजू की तरह है। इसके दोनों पलड़े बराबर होते हैं। एक तरफ पक्ष है और दूसरी तरफ विपक्ष है। मेरा पूरा विश्वास है कि दोनों

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

पलड़ों को आप संतुलन से, ईमानदारी के साथ इनको बहुत अच्छी तरह से संचालित करने का काम करेंगे। आपने अवसर दिया, इसके लिये मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहती हूं और मैं हम सबकी ओर से आपसे प्रार्थना करती हूं कि आपका जो कार्यकाल होगा, वह एक बहुत ही अच्छा, एक बहुत ही सुन्दर और ऐतिहासिक कार्यकाल हम लोगों के लिये होगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष**: माननीय श्री राजकुमार जी रोत।

**श्री राजकुमार रोत** (चौरासी): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबकी सर्वसम्मति से आज आपको अध्यक्ष चुना गया, उसके लिये मेरी ओर से और मेरे संगठन की ओर से आपको बधाई देना चाहूंगा।

आज पूरे राजस्थान की निगाहें हैं कि राजस्थान का जो सर्वोच्च सदन है, इस सदन में जो अध्यक्ष चुने जा रहे हैं, कई लोगों को पता था, कई लोगों को आज पता चला होगा और पूरे राजस्थान की आम जनता की निगाहें रहती हैं कि जो सरकार चुनी जाती है, उसमें पक्ष और विपक्ष, सबको अपनी बात को यहां तरीके से रखने के लिये एक प्रिंसिपल की जो भूमिका निभाते हैं और वह सौभाग्य आपको मिला है।

मुझे पूरी आशा है, मेरा पिछला पांच साल का कार्यकाल रहा और उस वक्त मैंने आपको देखा, आप विपक्ष में बैठे हुए थे और जो सरकार की कमियां थीं, सरकार की जो-जो योजनाएं थीं, उनमें जहां पर भी कहीं दिक्कत होती थी, उसको आप पुरजोर तरीके से उठाते थे। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि इधर पक्ष है और इधर विपक्ष है और हम जैसे लोग क्षेत्रीय पार्टी से आये हैं और निर्दलीय हैं तो यह जो गैलेरी है, हमको निष्पक्ष माना जाये। इधर पक्ष है, इधर विपक्ष है और हमें उम्मीद है कि आप इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुये जो सदस्य चुनकर आये हैं उनको अपनी बात रखने का अवसर देंगे।

मैं इस सदन में उन महापुरुषों को याद करना चाहूंगा जिन्होंने इस देश को आजाद कराया, कई कुर्बानियां दीं और हमको एक शानदार लोकतंत्र दिया। उन महापुरुषों की वजह से, उनके बलिदानों की वजह से आज हम लोकतांत्रिक तरीके से सदन में चुनकर आते हैं और आज सदन के नेता चुने गये। इसी प्रणाली से आज सर्वसम्मति से आप अध्यक्ष चुने गये। उन महापुरुषों के जो सपने थे कि हमारा जो देश है, वह एक लोकतांत्रिक व्यवस्था से चले और इसमें जनता की भावना के अनुरूप काम हो। सरकार कोई भी हो,

(श्री राजकुमार रोत)

पिछली बार कांग्रेस पार्टी की सरकार थी, अब भाजपा की सरकार आयी है। मैं चाहूंगा कि आपके माध्यम से यह सदन शानदार तरीके से चले और राजस्थान के किसी भी कोने से जो व्यक्ति आये हैं, उनमें कई नये चेहरे भी आये हैं, जो कई बड़ी-बड़ी हस्तियों, बड़े-बड़े मंत्रियों को हराकर आये हैं। जो नये सदस्य आये हैं, पिछली बार मैं भी नया सदस्य था तो मैंने खुद ने महसूस किया कि जो एक नया सदस्य आता है, उसके लिये कितनी कठिनाइयां होती हैं, तो आपसे निवेदन है कि जो नये सदस्य आये हैं, उनको अवसर दें।

मैं यह भी अनुरोध करना चाहूंगा कि राजस्थान के कई ऐसे इलाके हैं, जहां आज भी शिक्षा को लेकर और जो मूलभूत सुविधाएं हैं वहां उनका अभाव है। ऐसे सदस्यों को आप चिह्नित करें और ऐसे सदस्यों का विशेष ध्यान रखें। जो हमारा आदिवासी बहुल क्षेत्र है, कोटा के पास बारां वाला इलाका है, इधर रेगिस्तान का इलाका देखो तो उस इलाके से जो सदस्य चुनकर आये हैं, उनकी जो बातें हैं, वह अच्छी तरह रखने का उनको अवसर दें। आपको पुन: धन्यवाद देना चाहूंगा और उम्मीद है कि अब तक के जितने सदन चले, उन सदनों में से सबसे श्रेष्ठ सदन इस बार चले और आपका और हमारा सबका रिकार्ड रहे। राजस्थान की जनता की भावना के अनुरूप और भारत के अन्दर जितने भी राज्य हैं, जितनी भी विधान सभाएं हैं, उन सब में बेस्ट विधान सभा के रूप में राजस्थान की विधान सभा का सदन हो, बेस्ट विधान सभा के रूप में अपन एक अच्छा परिचय देंगे। आपको पुन: मेरी ओर से और मेरे संगठन की ओर से बधाई और धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष**: माननीया श्रीमती दिया कुमारी जी, उप मुख्य मंत्री।

**सुश्री दिया कुमारी** (उप मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देती हूं कि सर्वसम्मति से आप इस पद पर विराजे हैं और जैसा हमने देखा है कि सरकार में रहकर और विपक्ष में रहकर भी आपने बहुत ही अनुशासित तरीके से हमेशा अपनी बात रखी है। आपका अपना जो कार्यकाल था सरकार में रहकर, वह भी हमने देखा है और आपने हमेशा सही का साथ दिया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सभी को और पूरे सदन को विश्वास है कि आप इस बार भी, जिस तरह से आप सदन को संभालेंगे, पूरी तरह से निष्पक्ष तरीके और अनुशासित तरीके से संभालेंगे और आपका मार्गदर्शन भी हम सबको मिलता रहेगा। मैं एक बार फिर से अपनी ओर से आपको बहुत-बहुत बधाई देती हूं।

**श्री अध्यक्ष**: माननीय सदस्य, श्री चन्द्रभान सिंह जी चौहान।

**श्री चन्द्रभान सिंह चौहान** (चित्तौड़गढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपको बधाई देता हूं। आज सर्वसम्मति से जो चुनाव हुआ वास्तव में आपका अनुभव इस विधान सभा का भी काफी लम्बा रहा है। लम्बे समय से आपने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का भी कार्य किया है और आप में काफी अनुभव है। इस बार आप विधान सभा अध्यक्ष चुने गये। आपको कांग्रेस के सदस्यों का भी ध्यान रखना है, बी जे पी के सदस्यों का भी ध्यान रखना है, छोटे सदस्यों का भी ध्यान रखना है और हम जो निर्दलीय चुनकर आये हैं, उन सबका भी आपको ध्यान रखना है। हमको भी आप बोलने का पूरा मौका दें। उनको भी अच्छा मौका मिले। मेरे कुछ भाई और बहिनें नये सदस्य के रूप में चुनकर आये हैं, उनको पूरा मौका मिले। आपको बधाई। धन्यवाद। जय हिन्द। जय भारत।

**श्री अध्यक्ष**: धन्यवाद। माननीय हनुमान जी बेनीवाल।

**श्री हनुमान बेनीवाल** (खींवसर): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो आप अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए और सारे सदन ने, सारी पार्टियों ने, निर्दलीय और जितने भी छोटे दल थे, सबने मिलकर जैसे ही आपका नाम भारतीय जनता पार्टी की तरफ से अध्यक्ष के लिये घोषित हुआ, सबने यह मन बना लिया था कि देवनानी जी अध्यक्ष बन रहे हैं तो हमें डिस्टर्ब नहीं करना है, इनको अध्यक्ष बनाना है, क्योंकि हमने देखा कि आपने सबसे ज्यादा लड़ाई लड़ी। मैं तो आपके साथ रहा हूं और मैंने तो यह भी देखा है कि आपको इनका ध्यान ज्यादा रखने के बजाय हमारा ज्यादा रखना है, क्योंकि पिछली बार आपको बोलने नहीं देते थे। इस बात को भी आपको ध्यान में रखना है। पिछली बार जब आप स्थगन लगाते थे, पर्ची लगाते थे तो जैसे ही आपका नाम आता तो माइक बन्द हो जाता था तो इस बात का तो आपको ध्यान रखना चाहिये। हमारे जैसे जो छोटे दल हैं और निर्दलीय, इनका विशेष रूप से ध्यान रखना है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के अन्दर हमारे कई साथी, जो लोक सभा के अन्दर थे, उन्होंने विधान सभा का चुनाव लड़ा। लोक सभा से विधान सभा के अन्दर आने के बाद यहां एक चीज बहुत खलेगी। लोक सभा एक साल में 80-90-100 दिन तक चलती है और यहां 20-25 दिन ही विधान सभा चलती है। प्रतिपक्ष के नेता का मामला शायद उलझन के अन्दर है, जल्दी ही हो जाये। मैं इनको कहता हूं कि जल्दी से प्रतिपक्ष का नेता बनायें

(श्री हनुमान बेनीवाल)

और हम सब मिलकर, आप सर्वदलीय बैठक बुलायें और बैठक बुलाकर तय करें कि राजस्थान की विधान सभा साल के अन्दर कम से कम 35-40 दिन चले और एक चीज यह भी तय करा दें कि जब हम सांसद और विधायक बन गये तो हमारे पास इतने लोग आते हैं कि विधान सभा में मामला उठा लो, लोक सभा के अन्दर उठा लो, उनको लगता है कि लोक सभा और विधान सभा में जैसे ही यह मामला उठेगा, तो काम हो जायेगा। लेकिन, दुर्भाग्य से, देखिये, स्थगन लगता है, पर्ची लगती है, हम यहां बोलते हैं और उसके बाद मंत्री जवाब नहीं देते हैं तो सरकार को, आपको यहां यह नये नियम बनाने पड़ेंगे कि विधान सभा के अन्दर कोई मामला उठता है, दूसरा जिस तरह लोक सभा के अन्दर नियम 193 के तहत चर्चा होती है तो यहां भी उसी तरह हम देख रहे हैं कि पानी, बिजली, कानून-व्यवस्था और विभिन्न विषयों पर यहां चर्चा लगातार होती है। मेरा निवेदन है कि हाउस ज्यादा-से-ज्यादा चले, तब लोकतांत्रिक मूल्यों की रखवाली हो सकती है। हमें आपसे बड़ी उम्मीद है कि आप 2003 से लेकर 2023 तक लगातार जीतते रहे और हमें यह भी पता है कि आप ही के दल के कई लोग यह नहीं चाहते थे कि आप बार-बार जीतकर आओ, लेकिन फिर भी आप जीतकर आ जाते थे। आपकी बहुत मेहनत थी वहां पर। हम तो यह चाह रहे थे कि आप दूसरे पद की ओर जा रहे हो, लेकिन यहां आकर रुक गये और विधान सभा अध्यक्ष आप बन गये। मैंने देखा कि दिल्ली के अन्दर बहुत से नेता सी.एम. की बात करते थे, देश के अन्दर उनको विधान सभा का अध्यक्ष बना दिया। खैर, मैं इसमें नहीं जाना चाहूंगा।

हम आपको यही आश्वस्त करते हैं कि हम आपका सहयोग करेंगे। भारतीय जनता पार्टी जो सत्ता के अन्दर आई है, जिन मुद्दों को लेकर आई है, मुख्य मंत्री जी बैठे हैं, दोनों डिप्टी सी.एम. बैठे हैं, जिन मुद्दों को लेकर राजस्थान की जनता ने, जवान और किसान ने आपको वोट दिया और आपको जिन मुद्दों की वजह से विपक्ष में बैठाया, आप लोग मिलकर उनकी भी चर्चा करायेंगे। आप भी अपने घोषणा-पत्र को, हूबहू जो घोषणा-पत्र वे लेकर आये हैं, उसकी पालना करायेंगे। आप निर्देशित करते रहेंगे। आप समय-समय पर हाउस के अन्दर कई ऐसे निर्णय भी देंगे, जिससे लगे कि विधान सभा अध्यक्ष ने एक नई पहल राजस्थान की विधान सभा में की है। अध्यक्ष महोदय, आपको बहुत-बहुत बधाई।

**श्री अध्यक्ष**: माननीय डा. सुभाष गर्ग।

**डा. सुभाष गर्ग** (भरतपुर): माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूं। राजस्थान विधान सभा के सभी सदस्यों का धन्यवाद भी देना चाहता हूं कि आपका निर्विरोध निर्वाचन हुआ।

साथ ही छोटे दल का होने के नाते सभी लोगों की जैसे अपेक्षा है, उसी तरह से मेरी भी अपेक्षा है। आप स्वयं यह जानते हैं, जैसा कि हनुमान बेनीवाल जी ने भी कहा था कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका हैं। न्यायपालिका का सबसे बाद में हस्तक्षेप होता है। मैं समझता हूं कि विधायिका का जो कंट्रोल होना चाहिए, उससे गुड गवर्नेंस देने का जो आपका भी मकसद है, जैसा कि आपने कहा कि 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास', मैं सोचता हूं कि इसी स्लोगन को ध्यान में रखते हुए पूरे सदन को साथ लेकर के चलेंगे। जो रोल आपका पिछली बार विपक्ष के रूप में रहा, उसी तरह से विपक्ष के साथियों का भी रोल रहेगा, उसको बड़े अनुशासित तरीके से नियंत्रित करते हुए हमें अपनी बात उठाने का मौका देंगे। निश्चित रूप से सरकार की जो अच्छी बातें होंगी, उनका हम समर्थन भी करेंगे।

एक गुड गवर्नेंस देने के लिए जो एक विधायक के रूप में ड्यूटी होती है उसको हम उठायेंगे। हमें उम्मीद है कि आप एक शिक्षक रहे हैं, मैं भी शिक्षक हूं, मैं समझ सकता हूं। हालांकि आपको एक बड़े ही कूटनीतिक तरीके से इस कुर्सी पर भेजा गया है, लेकिन मेरी बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएं बधाइयां।

**श्री अध्यक्ष**: धन्यवाद। और कोई माननीय सदस्य अपने विचार प्रकट करना चाहें तो संक्षेप में, दो मिनट में कर सकते हैं।

**श्री घनश्याम** (टोडाभीम): माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले तो आपको बहुत-बहुत बधाई, बहुत-बहुत शुभकामनाएं। ये कह रहे थे कि सदन में सभी नये सदस्यों का ज्यादा से ज्यादा ध्यान रखा जाये। मेरा मानना है कि हमारे मुख्य मंत्री जी भी पहली बार विधायक बने और मुख्य मंत्री बने हैं, तो नये सदस्यों का तो सरकार वैसे भी पूरा ध्यान रखेगी।

मैं यह भी आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मैं तो पुराना हूं लेकिन जो नये आये हैं पहली बार उनकी पैरवी तो अपन ही करेंगे और कौन करेगा?

**श्री अध्यक्ष**: चलिए, आप बोलिये।

**श्री घनश्याम** (टोडाभीम): मैं पुन: आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष**: वे पहले खड़े हो गये, फिर आपका।

**श्री जुबेर खान** (रामगढ़): अध्यक्ष महोदय, मेरा तो आपको दिल की गहराई से बहुत-बहुत बधाई।

एक व्यक्ति विशेष जब किसी वातावरण में काम करता है और दूसरे वातावरण में आता है तो उनको अपने आपको बदलने के लिए समय लगता है। आपकी तारीफ जिस संदर्भ में हो रही है कि आप मुद्दे उठाते थे, आपका माइक बंद कर दिया जाता था। उस धारणा को छोड़कर अब आसन का जो आचरण होना चाहिए, आसन का जो कर्तव्य होना चाहिए, आसन का जो अधिकार है, उसका निष्पक्षता से उपयोग करेंगे, न कि आप पिछले 25 साल से जिस रोल में रह रहे हैं, उस रोल को अपने ऊपर हावी होने देंगे। एक बार पुन: आपको बहुत-बहुत बधाई। धन्यवाद। जय हिन्द।

**श्रीमती अनिता भदेल** (अजमेर दक्षिण): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो आपको इस पद पर आने के लिए बहुत-बहुत बधाई। एक लंबा अनुभव आपका रहा है। हमने कई अध्यक्षों को इस सीट पर देखा है। नियम, कायदे, परम्पराएं राजस्थान विधान सभा की बहुत महान् रही हैं। विधान सभा ने बहुत अच्छा इतिहास रचा है।

आप अजमेर से आते हैं। मेरा भी सौभाग्य है कि मैं भी अजमेर से आती हूं। (व्यवधान) हां, क्षेत्रवाद तो होता ही है। बिलकुल, क्षेत्रवाद तो होता ही है।

**श्री अध्यक्ष**: माननीय सदस्य।

**श्रीमती अनिता भदेल** (अजमेर दक्षिण): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बधाई देते हुए सिर्फ इतना निवेदन करना चाहती हूं कि मैं 2003 में जब पहली बार चुनकर आई थी तो हमें पर्ची डालने का एक सिस्टम मिला होता था। हम अपने क्षेत्र की पर्चियां डालते थे। जिसका सौभाग्य होता था उसको बोलने का अवसर मिलता था। मंत्री महोदय जवाब देते थे और हमारे क्षेत्र की बहुत सारी समस्याओं का उन पर्चियों के माध्यम से समाधान हो जाता था।

आवश्यकता के अनुसार बहुत सारी नई परम्पराएं बनती हैं। जैसे-जैसे समय की आवश्यकता होती है वैसे-वैसे हम नये नियम भी बनाते हैं। कुछ

(श्रीमती अनिता भदेल)

परम्पराओं को पिछली बार, मैं नहीं जानती कि किस कारण से रोका गया, पर मेरा यह प्रस्ताव है हम सब माननीय सदस्यों की ओर से कि पर्ची की जो व्यवस्था थी, इस सत्र में आप उसको प्रारम्भ करेंगे। डोटासरा जी ने भी समर्थन किया है। अब तो समर्थन करेंगे, लेकिन उस समय समर्थन करते तो मजा आता। जब सत्ता में थे तब समर्थन करते तो मजा आता। तब तो जवाब नहीं देना था न।

**श्री अध्यक्ष**: आप प्रश्न-उत्तर न करें।

**श्रीमती अनिता भदेल** (अजमेर दक्षिण): अध्यक्ष महोदय, आपको एक बार पुन: बहुत-बहुत बधाई देते हुए मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएं। आप निश्चित रूप से अनुभवी हैं। आप अच्छे से सदन को चलायेंगे। सब माननीय सदस्यों को साथ लेकर चलायेंगे। इतनी शुभकामनाओं के साथ आपको एक बार फिर बहुत-बहुत बधाई।

**श्री गजेन्द्र सिंह** (लोहावट): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको एक छोटा-सा उदाहरण देना चाहता हूं कि पिछली सरकार में माननीय मुख्य मंत्री जी एक लिटरेरी फेस्टिवल था भूटान के अन्दर, नहीं पधार सकीं तो मुझे भेजा गया। उस समय वहां पर पार्लियामेंट चल रही थी and it was in progress. मैंने इच्छा जाहिर की कि मैं जाकर के सेशन देख सकूं। मैं वहां सेशन के अन्दर गया। जितने भी पार्लियामेंटेरियन थे, सब अपनी ट्रेडिशनल ड्रेस में, तलवार वगैरह सब थी, ऊपर स्पीकर थे और हमें ट्रांसलेट करने के लिए ईयर फोन्स के साथ गैजेट दिये थे।

मैं एक छोटे से देश का उदाहरण देना चाहता हूं कि प्रश्न काल शुरू हुआ और स्पीकर ने बोला क्वेश्चन नंबर वन, तो कहा कि आपको एक मिनट मिलता है, आप क्वेश्चन पूछ लीजिये। एक मिनट में क्वेश्चन पूछ लिया। उसके बाद मंत्री ने जवाब दिया। उनको 3 मिनट मिले। प्रश्न क्या था कि हमारे यहां पर 4 कच्ची सड़कें बननी थीं। छोटा-सा किंगडम है। वह आपने कहा था कि इस वित्तीय वर्ष में कंपलीट होनी हैं। वह क्यों कंपलीट नहीं हुई? मंत्री जी ने जवाब दिया कि यह जो सड़कें कंपलीट होनी चाहिए थी, इंडिया से हमें ग्रांट मिलना था, वह हमारे पास नहीं आया, इसलिए नहीं कर पाये। मेरा आपसे यही अर्ज है कि मैं चौथी बार इस विधान सभा में आया हूं। हम लोग क्यों नहीं एक डिसिप्लेन मेन्टेन कर सकें। प्रश्न पूछने वाले को अपना टाइम

(श्री गजेन्द्र सिंह)

मिले और जिस मंत्री को जवाब देना है उसको टाइम मिले। जब बिजली की बात होती है तो लोग पानी का इश्यू रेज करते हैं। मैं सोचता हूं कि हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन भूटान जैसे छोटे देश को देखकर मैंने सोचा कि इतना छोटा देश है और इतना डिसिप्लेन रखने वाला कंट्री है।

मुझे आपसे और पूरे हाउस से यही निवेदन है कि डिसिप्लेनरी तरीके से चलें और हम सबकी आवाज उठा सकें। धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष**: पहले माननीय सदस्य यूनुस खान जी बोल रहे हैं।

**डा. ऋतु बनावत** (बयाना): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको बहुत-बहुत बधाई और बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

मैं आपसे यह अपेक्षा करती हूं कि आप राजनीतिक जीवन से पहले शिक्षक रहे हैं और शिक्षकों के लिए यह कहा जाता है कि वह कुम्हार की भांति ऊपर से थपकी देते हैं और अन्दर से हाथ देकर संभालते भी हैं। आपसे यही अपेक्षा रहेगी कि हम जो नये विधायक चुनकर आये हैं उनको आप ऊपर से थपकी तो दे दें, लेकिन संभाल भी करें और हमको ज्यादा से ज्यादा समय भी दें।

**श्री जवाहरसिंह बेढ़म** (नगर): माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपको आपके निर्वाचन पर बहुत-बहुत शुभकामनाएं देना चाहता हूं। मैं भी पहली बार चुनकर आया हूं। 15-20 साल से हम भी दर्शक दीर्घा में बैठकर के सदन की कार्यवाही देखते रहे हैं। आप शिक्षाविद् हैं, निश्चित रूप से आपने बहुत लोगों को तराश कर यहां तक पहुंचाने में सहयोग किया है। आपको पक्ष और विपक्ष दोनों ने ही सर्वसम्मति से चुना है। यह निश्चित रूप से गौरव की बात है। राजस्थान विधान सभा के संचालन में चार चांद लगेंगे, ऐसी हमारी उम्मीद है।

मैं भी समझ रहा था कि आपकी शुभकामनाएं तब तक अधूरी थीं, जब तक हमारी अजमेर से आने वाली आदरणीया अनिता भदेल जी ने नहीं दी। माननीय डोटासरा जी आपको संन्यास आश्रम की ओर ले जाते हैं, मैं उसके बारे में यह कहूंगा कि संन्यास नहीं, आप अनवरत रूप से हम सबको मार्गदर्शन देकर हमारा संरक्षण करते रहेंगे। अजमेर का कनेक्शन टोंक से आने वाले सचिन पायलट साहब का और आपका निश्चित रूप से जाहिर हुआ है। उसके लिए भी आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

**श्री यूनुस खान** (डीडवाना): माननीय अध्यक्ष महोदय, आज आपका

(श्री यूनुस खान)

निर्विरोध निर्वाचन हुआ है, आपको बहुत-बहुत बधाई और बहुत-बहुत शुभकामनाएं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके पास बहुत अनुभव है, दस वर्ष तक तो आप पक्ष में रहे और दस वर्ष तक आप विपक्ष में रहे, मतलब बराबर का आपके पास अनुभव है। इन अनुभवों को आधार बनाकर आप अपने इस आसन से निर्णय करेंगे, ऐसी उम्मीद हम आपसे करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक सुझाव भी है, आज पहला दिन है, क्योंकि बाद में ऐसा मौका आएगा नहीं, सुझाव यह है कि अन्य विधान सभाओं में हमारी जो परम्पराएं हैं उनका भी एक दल बनाकर, एक कमेटी बनाकर आप उनका अध्ययन करवाएं और ज्यादा से ज्यादा लोगों को अपने क्षेत्र की समस्याएं रखने का मौका मिले क्योंकि 'हां पक्ष' और 'ना पक्ष' को जो समय का आबंटन होता है उसमें उनको समय ज्यादा मिलता है और जो अन्य दलों के या जो निर्दलीय जीतकर आए हैं उनको कई बार अपनी बात रखने का मौका नहीं मिलता है। इसलिए आप एक अध्ययन करवाकर नई परम्परा शुरू करें, क्योंकि आप जिस युग के हैं, आपसे उम्मीदें भी बहुत ज्यादा हैं तो आप एक नई परम्परा शुरू करें कि लोगों को ज्यादा से ज्यादा मौका कैसे मिले। उसके लिए मैं सोचता हूं कि आप निर्णय करके, कमेटी बनाकर इस तरीके का सर्वसम्मत प्रस्ताव पास करेंगे कि लोगों के हितों के साथ कोई कुठाराघात नहीं हो और जन समस्याओं पर इस हाउस में चर्चा हो और चर्चा होने के बाद उस पर इस तरीके का मैकेनिज्म आप डवलप करें कि वो सरकार तक पहुंचे और सरकार उस पर निर्णय करे जिससे लोगों को लाभ मिले। यही मेरा कहना है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बार पुन: आपको बहुत-बहुत बधाई और बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

**डा. प्रेम चन्द बैरवा** (उप मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया है, इसके लिए मैं बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देना चाहूंगा। आपका लम्बा अनुभव रहा है। निश्चित रूप से आपको जो भी महकमे दिए गए थे, आप उनमें सबको संतुष्ट करते थे और यह भी कहते थे कि मैं कुछ अब करूंगा, कुछ अगले जन्म में करूंगा, यह कहकर संतुष्ट करते थे। निश्चित रूप से सभी दलों को आप संतुष्ट करके इस सदन को चलाएंगे। धन्यवाद। जय हिन्द। जय भारत।

**श्री जोगाराम पटेल** (लूणी): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके सर्वसम्मति से निर्वाचन पर आपको बहुत-बहुत बधाई। आप ब्रह्माजी की नगरी से आते हैं, शिक्षक के रूप में रहे हैं, विधान सभा में आपका लम्बा अनुभव रहा है। यह हमारा सौभाग्य है कि ऐसे शिक्षाविद्, सबको साथ लेकर चलने वाले, समान दृष्टि से देखने वाले को विधान सभा के इस पवित्र आसन पर विराजने का मौका मिला है। विक्रमादित्य का यह आसन है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप उसी रूप में इसे निभाएंगे। आपको सर्वसम्मति से निर्वाचन के लिए पुन: बहुत-बहुत बधाई। धन्यवाद।

**श्री गोविन्द सिंह डोटासरा** (लक्ष्मणगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, मतलब की बात तो किसी ने नहीं कही। मतलब की बात यह है कि आप थोड़ा-सा मुस्कुराते रहें तो अच्छा लगता है। आप हर घण्टे, आधे घण्टे में बस थोड़ा मुस्कुराते रहें।

**श्री रविन्द्र सिंह भाटी** (शिव): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको सर्वसम्मति से निर्वाचित होने पर खूब-खूब बधाई। इस पूरे सदन में मैं सबसे छोटा हूं, आप सभी बड़े भाइयों और बड़ी बहनों को मेरा प्रणाम। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी के साथ में हमें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। मेरे से पहले बहुत से वक्ताओं ने अपनी बात रखी और जैसा कि हमने हर जगह देखा, आपका व्यवहार सबसे अलग रहा है और हम सब निर्दलीयों को अलग से बात रखने का मौका मिलेगा। मैं उस सीमांत क्षेत्र से आता हूं जहां पर आज भी मूलभूत सुविधाओं की कमी है, उस क्षेत्र की बात रखने का हम सभी को मौका मिलेगा। मैं आपको पुन: खूब-खूब शुभकामनाएं देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द। जय भारत।

**श्री अध्यक्ष**: माननीय सदस्य, श्रवणजी।

**श्री श्रवण कुमार** (सूरजगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, बड़े सौभाग्य की बात है कि सभी पार्टियों ने मिलकर चुना है। मेरी तो आपसे एक विनती है कि हमने पूनमचंदजी विश्नोई, परसरामजी मदेरणा जैसे कई अध्यक्ष देखे हैं। आप कम से कम यह करवा देना कि यह अध्यक्ष सबसे अच्छा है, क्योंकि आप ऐसे करो कि बैठ जाओ, बैठ जाओ, तो हम तो ऐसे बैठे ही रहेंगे। आपकी आदत बहुत है, बैठ जाओ। यहां पर जो भी अध्यक्ष बैठता है, वह कहता है कि बैठ जाओ तो बैठे तो हैं ही। आप ऐसा करना मेहरबानी करके कि हमने बहुत अध्यक्ष देख लिए, आप सबसे एक नम्बर के अध्यक्ष कहलवाना चाहें इधर

(श्री श्रवण कुमार)

कहलवाना, चाहें उधर कहलवाना, आप इम्प्लीमेंट करवाना क्योंकि जो भी यहां पर रिजोल्यूशन पास होगा उसकी क्षेत्र में पालना होनी चाहिए। हम बोलकर घर चले गए, आपका दायित्व बनता है कि सभी एम एल एल का, मंत्रियों का, सारथी आप हो, हमारी जो पीड़ा होगी, आपको हम बताएंगे, आप मंत्री तक पहुंचाएंगे, मुख्य मंत्रीजी तक या जहां भी पहुंचाएंगे, जितने भी एम एल ए हैं उनके सारथी आप हैं तो ध्यान रखना, सारथी बनकर ही काम करना।

**श्री पब्बाराम विश्नोई** (फलौदी): माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि मैं भी शिक्षा क्षेत्र से आता हूं और आप एक महान् शिक्षक के रूप में यहां स्थापित हुए हैं, राजस्थान की हृदयस्थली से आप आ रहे हैं। जिस समय 1956 में अजमेर को राजस्थान में सम्मिलित किया गया था, उस समय सभी विभागों के अधिकारी एक पद ऊपर आकर यहां पर सम्मिलित किये गये थे। उस समय हम लोग स्टूडेंट थे, उस समय शिक्षा क्षेत्र में बड़े अधिकारियों के पदों पर अजमेर से आने वाले लोगों को देखा है। आज एक महान् शिक्षक को इस गौरवांवित होने वाले पद पर विराजित होते देखकर एक शिक्षक को कितना हर्ष होता है, वो हर्ष मुझे भी हो रहा है। मैं आपको अपने हृदय की अनंत गहराइयों से हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूं। धन्यवाद। जय भारत।

**श्री अध्यक्ष**: आप सभी की भावनाओं को समाहित करते हुए आगे बढ़ेंगे।

**श्री शंकरसिंह रावत** (ब्यावर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो आपके जिले से हूं, हमारे को तो सुनना ही पड़ेगा।

**श्री अध्यक्ष**: सभी को बोलने का अवसर मिलेगा।

**श्री शंकरसिंह रावत** (ब्यावर): माननीय अध्यक्ष महोदय, आप अजमेर जिले से यहां पधारने पर और अजमेर जिले का गौरव बढ़ाने के लिए, राजस्थान विधान सभा में सर्वसम्मति से पक्ष और विपक्ष, सब निर्दलीयों की तरफ से अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए हैं, उसके लिए मैं अपनी ओर से और हमारे दल की तरफ से बहुत-बहुत शुभकामना और बधाई देता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक ही निवेदन है कि सदन के अन्दर जो विषय कोई सदस्य उठाए तो उसकी सरकार की तरफ से पूरी क्रियान्विति होनी चाहिए, अधिकारी उस पर कार्य करें। धन्यवाद। (व्यवधान)

**श्री पूसाराम गोदारा** (रतनगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको आपके सर्वसम्मत निर्वाचन पर बधाई देना चाहता हूं और आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जो भी हमारे नये सदस्य हैं, चाहे पक्ष के हैं या विपक्ष के हैं, हम आपसे यह अपेक्षा करते हैं क्योंकि आप बहुत विद्वान हैं, शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। जैसे हमारे डोटासरा साहब ने सरकार में रहते हुए शिक्षा क्षेत्र में रहते हुए नये आयाम स्थापित किये, शिक्षा मंत्री रहते हुए बहुत शानदार परिपाटियां डालीं उसके कारण से आज शिक्षा विभाग बहुत अच्छा चल रहा है, इसलिए हम सब जो सदस्य हैं, विपक्ष के हैं, चाहे पक्ष के हैं, जो पहले वक्त आये हैं उनको अपने विधान सभा क्षेत्र की जो जन समस्याएं हैं उनको यहां रखने के लिए और आमजन की सुविधाओं की जो बातें हैं उनको यहां रखने के लिए वक्त देने का और उनके प्रश्नों का उत्तर दिलाने का आप करेंगे, यह मेरा निवेदन है। मैं आपको पुन: आपके सर्वसम्मत निर्वाचित होने पर बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। जय हिन्द। (व्यवधान)

## वासुदेव देवनानी, श्री, नवनिर्वाचित अध्यक्ष, का आभार

**श्री अध्यक्ष**: आपकी भावनाओं का आदर है, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

आप सबने जैसी भावनाएं प्रकट की हैं, निश्चित रूप से उसका पूरी तरह आदर करते हुए हम आगे बढ़ेंगे।

माननीय सदस्यगण, आप सभी का सोलहवीं विधान सभा के लिए निर्वाचित होने पर इस सदन का हिस्सा बनने पर बहुत-बहुत बधाई और शुभकामना देता हूं।

माननीय सदस्यगण, राजस्थान विधान सभा की यह ऐतिहासिक और शानदार परम्पराओं का निर्वहन करते हुए अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचन की महान् परम्परा को आपने जो बनाए रखा है, इसके लिए सभी दलों का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। जिस तरह से आज प्रस्तावक और अनुमोदक, माननीय मुख्य मंत्री महोदय, माननीय पूर्व मुख्य मंत्री महोदय, माननीय पूर्व मुख्य मंत्री अशोक जी गहलोत, सचिन जी पायलट, श्री गोविन्द सिंह जी डोटासरा, श्रीमान् हनुमान जी बेनीवाल, सुभाष जी गर्ग, माननीय सुश्री दिया कुमारी जी, राजकुमार जी रोत, और बाकी सदस्यों ने जिस प्रकार से अपनी भावनाएं प्रकट की हैं और उन्होंने प्रस्ताव भी किया और साथ में अनुमोदन भी किया, आप सबका मैं बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं। जिन्होंने

(श्री अध्यक्ष)

सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर निर्वाचित कर मेरे प्रति जो विश्वास व्यक्त किया है, पुन:-पुन: आप सभी का बहुत-बहुत आभार। साथ में, उन सभी दलों का भी बहुत-बहुत आभार, जिन्होंने मुझ पर विश्वास व्यक्त किया कि इस पद पर बैठकर मैं सबके साथ न्याय कर पाऊं। राजस्थान की आन-बान-शान महाराणा प्रताप के शौर्य, पन्नाधाय के बलिदान, मीरा की भक्ति, वीर तेजाजी की वचनबद्धता, महाराज देवनारायण जी की तपस्या स्थली, सालासर बालाजी और बाबा श्याम जी की पावन धरा एवं भगवान झूलेलाल की इस धरा की जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले आप सभी विद्वज्जनों को प्रणाम करता हूं।

आप सभी जानते हैं कि इस गरिमामय पद पर हमारे राजस्थान के योग्य और विद्वान अध्यक्षों ने इस सदन में स्वच्छ परम्पराएं स्थापित की हैं, जो इस देश के अन्य विधान मण्डलों के लिए भी अनुकरणीय हैं। इस अवसर पर उनसे मिली महान विरासत के लिए मैं उन्हें आदरपूर्वक स्मरण करता हूं। इस पद की बड़ी गरिमा रही है। मेरी भी जिम्मेदारी है कि इस पद की गरिमा को बनाये रखने हेतु कार्य करूं, जिसमें आप सब का सहयोग अपेक्षित है। मैं शिक्षक रहा हूं और मेरा जीवन शिक्षक के आदर्शों से ओत-प्रोत रहा है। मैं सदैव इस सदन की मान-मर्यादा, गरिमा, न्याय और निष्पक्षता का वातावरण बनाये रखूंगा, ऐसा मैं आप सभी को विश्वास दिलाता हूं।

यह लोकतंत्र की गौरवमयी विशेषता है कि एक आदिवासी परिवार की महिला देश के सर्वोच्च पद पर आसीन है। एक साधारण परिवार का व्यक्ति देश के प्रधान मंत्री पद पर आसीन है। एक किसान का बेटा आज राजस्थान का मुख्य मंत्री निर्वाचित हुआ है और विभाजन से पीड़ित परिवार का एक सदस्य आज राज्य की विधान सभा के अध्यक्ष पद पर आसीन हुआ है। यह मेरे राजनीतिक सफर की एक विशिष्ट उपलब्धि है, वहीं दूसरी ओर मेरे लिए गौरव और सन्तोष का विषय भी है। आप सभी ने मुझे इस पद के योग्य माना, मैं आप सभी के प्रति कृतज्ञ हूं।

माननीय सदस्यगण, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में एक उक्ति है, “party in power must have its way; and party in opposition must have its say”, यानी जो आज सत्तापक्ष में हैं, उन्हें अपनी सरकार चलाने और निर्णय करने का तथा विपक्ष का काम उसमें अपनी बात कहकर उनका

(श्री अध्यक्ष)

ध्यान आकर्षित करना है। माननीय सदस्यगण, मैं इस अवसर पर पहली विधान सभा के खट्टे-मीठे प्रकरणों पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। मेरा मानना है, ''experience is the best teacher", अनुभव सबसे बड़ी शिक्षा है। हम पिछले अनुभवों से शिक्षा लेकर इस सदन का संचालन अच्छे और सुचारु रूप से करें, यह हम सबके ध्यान में रखने योग्य बात है। यह नयी सदी का विकसित भारत है, डिजिटल भारत है, विश्वगुरु की ओर अग्रसर भारत है।

इस समय हमारी जिम्मेदारियां बदलते विश्व में निरन्तर बढ़ रही हैं। हम सबको मिलकर भारत को श्रेष्ठ भारत बनाना है। इसमें राजस्थान को भी कदम से कदम मिलाकर सहभागी बनना है। यह विधान सभा भी डिजिटल बने, इस ओर कई कदम और उठाने होंगे। सदन की अधिक बैठकें हों, सार्थक बहस हो, इसका हम सब मिलकर प्रयास करेंगे, जिससे हम राज्य की सात करोड़ जनता का जीवन स्तर ऊंचा कर सकें, अच्छी शिक्षा और चिकित्सा उपलब्ध करा सकें। साथ ही, वंचित लोगों को आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध करा सकें, इसके लिए सम्पूर्ण मनोयोग से बड़े विजन के साथ हम सबको कार्य करना होगा, ऐसी मेरी अपेक्षा है।

माननीय सदस्यगण, आप सभी से मेरा निवेदन है कि अध्ययन की आदत डालें। इससे ज्ञान बढ़ेगा। इससे हम सदन की कार्यवाही में अच्छा योगदान कर सकेंगे। इसके लिए विधान सभा का बड़ा ही समृद्ध पुस्तकालय अनेकानेक पुस्तकों के साथ आपके स्वागत के लिए तैयार है। "Knowledge is a vast seashore and individuals standing on its bank are only culling bubbles", इस सिद्धान्त को मानकर हम अध्ययन करेंगे तो जीवन में बहुत कुछ सीख सकेंगे और आगे बढ़ सकेंगे। हमारे जो नये साथी हैं सदन में माननीय सदस्य के बतौर चुनकर आये हैं, अभी काफी सदस्य जिक्र कर रहे थे, "हम नये हैं, आप हमारा ध्यान रखें।", मैं उनसे भी आग्रह करता हूं, आपका ध्यान आकर्षित कर रहा हूं कि नियम 269 को जरूर पढ़ें। जब तक हम वह नहीं पढ़ेंगे, तब तक सदन में हम किस तरह की चर्चा कर रहे हैं, इसमें बाधा उत्पन्न होगी या हमारे पुराने साथियों से भी निवेदन करूंगा कि वे भी नियम 269 को पढ़ लें, रिफ्रेश हो लें और नये साथियों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करें। इससे सदन का वातावरण अच्छा रहेगा। हम सब लोग मिलकर कुछ अच्छी भूमिका निभा सकेंगे।

(श्री अध्यक्ष)

मेरा सभी से आग्रह है, सदन में हमारी उपस्थिति, जिसमें लगता है कि कई बार जीरो आवर के बाद हाउस में बहुत कम उपस्थिति रह जाती है, मेरा आप सबसे निवेदन है कि सदन में हम शत प्रतिशत रहें और सदन में अधितकम समय बैठें। इससे हम कार्यवाही में सकारात्मक भूमिका निभा सकेंगे और सीख भी सकेंगे। जनता ने हमें इसके लिए चुना है तो कुल-मिलाकर जितनी बैठकें होती हैं, उस समय तो कम से कम हम सदन में आएंगे, बैठेंगे, अपनी भूमिका निभाएंगे। अब तक का जो रहा है, उसमें निश्चित रूप से सदन जितने दिन चलता है, सबने यहां कहा कि हम इसे अधिक चलाएं। मेरा भी प्रयास रहेगा कि सदन अधिक दिन चले। इसके लिए हम निश्चित रूप से दोनों पक्षों का सहयोग लेकर सदन को अधिक दिन चलाने का प्रयास करेंगे और साथ में, सदन में सार्थक बहस हो, उसके लिए भी हम प्रयास करेंगे।

माननीय सदस्यगण, सदन की बहुत सारी कमेटियां भी बनती हैं। सभी सदस्य किसी न किसी कमेटी के सदस्य भी होते हैं। इन कमेटियों को हम सभी को प्रभावी बनाना है, ताकि सार्थक ढंग से हम कार्य कर सकें तथा इन कमेटियों की उपादेयता भी बढ़े। मैं आशा करता हूं कि हम मिलकर नियम और कानून का पालन करेंगे और संसदीय परम्पराओं को मजबूत बनाने का भी काम करेंगे। मैं आशा करता हूं कि आप मेरी भावनाओं को समझेंगे। सदन में डिस्कशन भी होगा, डिबेट भी होगी, डिस्सेंट भी होगा, पर हम समय का पूरा उपयोग करके किस तरह से पुन: नये राजस्थान को बनाने के लिए कान्ट्रीब्यूट कर सकते हैं, उसमें अपनी भागीदारी कैसे निभाएं, उसका प्रयास करेंगे, ऐसी मैं आप सबसे अपेक्षा करता हूं।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि चाहे नये सदस्य हों, चाहे छोटे दल के सदस्य हों, चाहे सत्तापक्ष हो या विपक्ष हो, इस पद की गरिमा को बनाये रखने के लिए आपको पूर्णतया आश्वस्त करता हूं। जैसा बताया गया, मैं शिक्षक भी रहा हूं। जब एक शिक्षक अपनी कॉपियां जांचता है, प्रिंसिपल अपनी कापियां जांचता है, उस समय वह यह नहीं देखता कि किस विद्यार्थी की कापी है। उसने उसमें क्या लिखा है, उसके अनुसार उसकी वह मार्किंग करता है तो निष्पक्षता का भाव एक टीचर के मन में स्वाभाविक रूप से रहता है। मुझे भी सौभाग्य मिला कि मैंने तीस वर्ष तक अध्यापन का काम किया। उसके बाद दस वर्ष पक्ष में रहे, दस वर्ष प्रतिपक्ष में रहे तो जो कुछ आवश्यक बातें हैं, मेरे ध्यान में हैं और आपने जो भावनाएं व्यक्त कीं, उन्हें भी मैंने ध्यान से सुना

(श्री अध्यक्ष)

है। आपको विश्वास दिलाता हूं कि उन सारी भावनाओं को निश्चित रूप से पूरी तरह प्रयास करेंगे कि सबके साथ मिलकर उन्हें पूरा करें।

एक बात जो मैं आपके ध्यान में लाना चाह रहा हूं, हम सबको सदन के नियमों, मर्यादाओं और परम्पराओं का भी पालन करना होगा। जैसे अभी एक माननीय सदस्य ने कहा कि आप कहते हैं, बैठ जाओ। जब प्रश्न काल होता है तो उसमें हर एक की अपेक्षा रहेगी कि हमारे प्रश्नों के उत्तर आएं, उसको किस प्रकार से करें, बैठेंगे अपन, बातचीत भी करेंगे, आपके सुझावों पर भी विचार करूंगा और साथ में जब बहस होती है तो हर एक दल के लिए समय निर्धारित होता है, सीमाएं होती हैं, सदन का कुछ समय होता है, फिर भी प्रयास करूंगा कि आप सबको अपनी बात कहने का पूरा अवसर मिले। इसका हम लोग प्रयत्न करेंगे।

माननीय सदस्य, आपकी कोई भी बात हो तथा दल की कोई बात हो, मैं पूर्णतया कोशिश करूंगा कि निष्पक्ष ढंग से उसका निर्णय करके सदन को आगे बढ़ाने का काम करूं। आशा करता हूं, आप इस काम में सदैव सहयोगी रहेंगे। मेरी आपसे भी अपेक्षा है, हम सब सदन के नियमों, मर्यादाओं का पालन करें और कोई भी ऐसी स्थिति नहीं बने कि आसन को कोई कठोर निर्णय लेने हेतु बाध्य होना पड़े। आइये, हम सब मिलकर एक नया इतिहास रचें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आप सबकी भावनाओं का आदर करते हुए आभार भी व्यक्त करता हूं और अपेक्षा करता हूं कि जो कुछ बातें आपने व्यक्त कीं और मैंने कुछ कही, हम सब मिलकर उनका पालन करेंगे। धन्यवाद।

सदन की कार्यवाही शुक्रवार, दिनांक 19 जनवरी 2024 के प्रात: 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

**(तदनन्तर सदन की बैठक 16:29 बजे शुक्रवार, दिनांक 19 जनवरी 2024 के 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)**